

बख्त बुलंद (१९५)

साई साहिब झूले जो आनंद आ अमां।
चिर जीवे साई मिठिड़ो बख्त बुलंद आ अमां॥

सचे शान ऐं सींगार सां साई साहिब बिराजे
जंहि जी रूप माधुरी अ ते काम देव भी लाजे
बलहार सतिगुर शेर तां हिन्द सिंधु आ अमां॥

कोकिल कुंज शोभा पुंज में अजु झूलो रचियो आ
फूल कलियुनि पतनि खे सिक साणु संचियो आ
चइनी पासे छाई दिव्य सुगंधि आ अमां॥

अमां राणी प्रेम सां झूला झुलाए
सिया राम जा सनेह सां मिठा गीतड़ा गाए
जणु हर्ष जो खिड़यो चौदसि चण्डु आ अमां॥

देवता आकाश मां गुलड़ा वर्षाईन
साई सियाराम जी था जै जै मनाईन
सतिसंग जो सौभागु मैगसि चंद आ अमां॥

दासनि जो दिलदार प्राण आधार आ धणी
जंहिजी युगल दरबार में बि घुरिज आ घणी
उहो साई सारी खलिक जो खावंद आ अमां॥

नितु नितु मैगसि महल में आनंद जी बहार
श्री राधा मधुर नाम जी कनि प्राण था पुकार
रस जो राजा साई रस जो कंद आ अमां॥